

उत्तरायण

यूँ सवेरे खुश होकर, माँ तिल के लड्डू लाई है।
इस चौखट पे स्वर्णिम किरणें, मस्त सवेरा लाई है।

नव प्रभात में, नव उदय को, घर से बाहर आए हैं।
इस सुनहरी शुभप्रभात में, पतंग हाथ में लाए हैं।

वो खुश है, ये खुश है, यहाँ खुशियाली ही छाई है।
संक्रांति के अवसर पर, नव आशा मन में आई है।

दक्षिणायन से उत्तरायण में, भानु कोण बदलता है।
धनु राशि से मकर राशि में, दिनकर रूप बदलता है।

उत्तर, बिहार में खिचड़ी कहे, कहे तमिल में पोंगल।
मिठास भरी हों हर दिल में, हों हर घर में शुभमंगल।

बच्चे हो या बूढ़े हो, महिला हो या जवान।
रोगी हो या भोगी हो, छोटे हो या महान।

विमलन हेतु सब चलकर, वो गंगा तट पर आए हैं।
गंगा के निर्मल जल में, स्वच्छ मन को करने आए हैं।

गाँव में देखो महिलाएँ, गा रही मंगल कीर्तन।
तान भर रहे नव युवक, और हँसते खेलते बालक गण।

पक गई हैं बालियाँ, मज़दूर काटने आए हैं।
दरांती, कुल्हाड़ी, रस्सी लेकर माँ पूजने आए हैं।

कर प्रणाम सविता को, नवआरंभ करने आए हैं।
संक्रांति के अवसर पर, नव आशा मन में लाए हैं।

Yashwant Singh Sonwaniya